साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

कवि और दूसरों का दर्द

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

एक पंछी
तिनका तिनका
चुनकर
जोड़कर
घोसला बनाता
और एक कवि
एक एक शब्द
जोड़कर
छोटी छोटी
संवेदनाओं को
पिरोकर
हैं रचता
एक कविता
एक पंछी का
नहीं होता
कोई ठिकाना
आज यहाँ
कल वहां
और एक कवि का
नहीं होता
एक ही फ़साना
एक ही दर्द
वह तो
कभी अपना
कभी पराया

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

दर्द महसूस करता
और रचता
नई नई कविता
व्यक्त करता
अपनी संवेदनाएं
और आशाएं
दूसरों का दर्द भी
जब अपना लगता
तब बनता
नयी कविता
एक कवि
हर वक्त
दूसरों की मदद
करना चाहता
बंटाना चाहता
हर किसी का दर्द
बस चले तो
दूसरों के लिए
बहा दे
कतराकतरा-
अपना रक्त
पर कवि
और बनिए में
फर्क होता
कवि आज खाता
कल की सोचता
पर बनिए की क्या कहते
खुद नहीं खाता
पर हैं खाते
उसके सात पुस्तें
कवि चाहता नहीं
पर हैं होता

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 08
September 2015

लाचार
बेवस
चाहकर भी
नहीं कर पाता
दूसरों की सहयता
इसीलिए
शायद
वो हैं रचता
एक कविता
ताकि कोई समझें
उसकी पीड़ा
सबका दर्द
और आये आगे
करने मदद
मेरी नहीं
उनकी नहीं
जिनकी दर्द ने
पाई हैं अभिव्यक्ति
कागज के पन्नों पे
पर कोई सुने तो सही
समझें तो सही
जरूरतमंद की जरुरी
लाचार की लाचारी
बेवस की बवासी
दूसरों का दर्द!